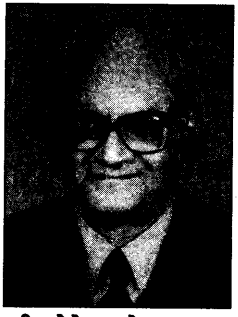

सन्देश

श्री योगेन्द्र मोहन गुप्ता
चेयरमैन, श्री पूर्णचन्द्र गुप्ता स्मारक ट्रस्ट

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि लक्ष्मी देवी ललित कला अकादमी का उद्घाटन 27 जुलाई, 2002 को होने जा रहा है।

ललित कला का संबंध सौन्दर्य से है और सौन्दर्य का मन से, ज्यों-ज्यों मानव, सभ्यता की ड्योढ़िया लांघता गया ललित कलाओं में भी निखार आता गया । सच तो यह है कि मानव के मानसिक विकास एवं सौन्दर्य बोध में ललित कलाओं का महत्वपूर्ण योगदान है । मन में उठने वाली भावनाओं की अभिव्यक्ति ललित कलाओं के माध्यम से होती है । साहित्य, संगीत, चित्र, मूर्ति एवं वास्तु कला, ललित कला के मुख्य अंग हैं । ललित कला के माध्यम से हम आत्मिक विकास एवं सुख की खोज में सदैव तत्पर रहते हैं । सुख और शांति की प्राप्ति ही इन कलाओं का मुख्य उद्देश्य है ।

किसी भी सभ्यता, देश, समाज के उत्थान व विकास का मूल्यांकन उस देश में विकसित ललित कलाओं के आधार पर ही सुनिश्चित किया जाता है क्योंकि उसके घटकों के मानसिक विकास का सीधा संबंध ललित कलाओं से है । हम इसे आध्यात्मिक ज्ञान की संज्ञा दें तो कोई अतिश्योक्ति न होगी ।

मेरी प्रभु से प्रार्थना है कि लक्ष्मी देवी ललित कला अकादमी के अन्तर्गत जो संगीत विद्यालय की स्थापना की गयी है वह सफलता के मार्ग पर अग्रसर हो और एक ऐसे वृहद संस्थान का स्वरूप धारण करे जिससे व्यक्ति और समाज का कल्याण हो।

शुभेच्छु
योगेन्द्र मोहन गुप्ता